

## दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 29-08-2025

### विषय सूची

- » उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वनों की कटाई और गर्मी से संबंधित मृत्यु दर
- » इसरो की तकनीकियाँ निजी फर्मों को हस्तांतरित
- » 15वां भारत-जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन
- » 'विदेशियों को भी अनुच्छेद 21 के अंतर्गत स्वतंत्रता का अधिकार है': उच्च न्यायालय
- » समुद्रयान परियोजना के अंतर्गत गहरे समुद्र में अन्वेषण

### संक्षिप्त समाचार

- » बर्मी अजगर
- » खेन राजवंश के पृथु राय
- » नुआखाई त्योहार
- » माउंट फूजी
- » विस्तारित दूरी की आक्रमणकारी गोला-बारूद (ERAM) मिसाइलें
- » राष्ट्रीय खेल दिवस
- » महिला सुरक्षा पर राष्ट्रीय वार्षिक रिपोर्ट और सूचकांक (NARI) 2025
- » भारतीय नौसेना में सम्मिलित, INS उदयगिरि और INS हिमगिरि की विशेषताएं और विरासत
- » महात्मा अय्यंकाल

## उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वनों की कटाई और गर्मी से संबंधित मृत्यु दर

### संदर्भ

- नेचर क्लाइमेट चेंज में प्रकाशित एक हालिया अध्ययन से पता चला है कि उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वनों की कटाई से उत्पन्न गर्मी के कारण 2001 से 2020 के बीच प्रत्येक वर्ष लगभग 28,000 अतिरिक्त गर्मी-संबंधी मृत्यु हुई।

### उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वनों की कटाई

- उष्णकटिबंधीय वन जैव विविधता से भरपूर पारिस्थितिकी तंत्र हैं जो मुख्य रूप से दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका और एशिया में पाए जाते हैं।
- **महत्व:** ये वन महत्वपूर्ण कार्बन सिंक के रूप में कार्य करते हैं, प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से ग्रीनहाउस गैसों को अवशोषित करते हैं और जल चक्र को नियंत्रित करते हैं।
  - ▲ हालांकि, बड़े पैमाने पर वनों की कटाई ने जलवायु पर प्रभाव डाला है और मानव जीवन की हानि भी की है।
- अध्ययन के अनुसार, 2001 से 2020 के बीच वैश्विक स्तर पर 16 लाख वर्ग किमी उष्णकटिबंधीय वन क्षेत्र नष्ट हुआ:
  - ▲ मध्य और दक्षिण अमेरिका: 7,60,000 वर्ग किमी
  - ▲ दक्षिण-पूर्व एशिया: 4,90,000 वर्ग किमी
  - ▲ उष्णकटिबंधीय अफ्रीका: 3,40,000 वर्ग किमी

### क्या आप जानते हैं?

- भारत राज्य वन रिपोर्ट 2023 के अनुसार, देश का वन और वृक्ष आवरण 8,27,357 वर्ग किमी है, जो देश के भौगोलिक क्षेत्र का 25.17 प्रतिशत है। इसमें 7,15,343 वर्ग किमी (21.76%) वन आवरण और 1,12,014 वर्ग किमी (3.41%) वृक्ष आवरण शामिल है।
  - ▲ वन और वृक्ष आवरण में सर्वाधिक वृद्धि दिखाने वाले चार राज्य हैं: छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, ओडिशा एवं राजस्थान।

- ▲ वन आवरण में सर्वाधिक वृद्धि दिखाने वाले तीन राज्य हैं: मिज़ोरम, गुजरात और ओडिशा।
- ▲ क्षेत्रफल के अनुसार सबसे अधिक वन और वृक्ष आवरण वाले तीन राज्य हैं: मध्य प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश एवं महाराष्ट्र।

### वनों की कटाई के कारण

- **कृषि विस्तार:** सोया, पाम ऑयल जैसी वस्तुओं के लिए वाणिज्यिक स्तर पर खेती उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वनों की कटाई का सबसे बड़ा कारण है।
- **लकड़ी और कागज के लिए कटाई:** कानूनी और अवैध दोनों प्रकार की लकड़ी कटाई वनों की हानि और क्षरण में योगदान देती है।
- **बुनियादी ढांचा विकास:** शहरों का विस्तार, नई सड़कें एवं बांध बनाना, खनन कार्य सीधे वन क्षेत्रों को साफ करते हैं और पारिस्थितिकी तंत्र को खंडित करते हैं।
- **अस्थायी जीविका गतिविधियाँ:** ग्रामीण जनसंख्या द्वारा ईंधन लकड़ी का संग्रह और झूम खेती (कटाई एवं जलाने की पद्धति) वनों के क्षरण में योगदान देती हैं।

### वनों की कटाई के प्रभाव

- **संग्रहीत कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन:** उष्णकटिबंधीय वन बड़े कार्बन सिंक होते हैं, जो मृदा और लकड़ी में भारी मात्रा में कार्बन संग्रहीत करते हैं।
  - ▲ जब वन काटे जाते हैं, तो यह कार्बन  $CO_2$  के रूप में उत्सर्जित होता है, जिससे वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है।
- **स्थानीय शीतलन प्रभाव की हानि:** पेड़ और पौधे मृदा से जल अवशोषित कर उसे वाष्प के रूप में वातावरण में छोड़ते हैं, जिससे शीत वायु होती है।
  - ▲ वन कटाई से यह प्राकृतिक एयर कंडीशनर समाप्त हो जाता है, जिससे स्थानीय तापमान बढ़ता है।
- **जैव विविधता की हानि:** वनों की कटाई से कई प्रजातियों के आवास नष्ट हो जाते हैं, जिससे जैव विविधता में गिरावट आती है और परागण व मृदा उर्वरता जैसी पारिस्थितिकी सेवाएं प्रभावित होती हैं।

- **मानव स्वास्थ्य और मृत्यु दर:** अनुमानित 28,300 मृत्युएँ प्रतिवर्ष वनों की कटाई से उत्पन्न गर्मी से जुड़ी होती हैं।
  - ▲ अत्यधिक गर्मी और उच्च आर्द्रता से हीट स्ट्रोक और अंग विफलता का खतरा बढ़ता है।
  - ▲ दक्षिण-पूर्व एशिया में जनसंख्या घनत्व और गर्मी की संवेदनशीलता के कारण आधे से अधिक मृत्युएँ हुईं।
- **सामाजिक-आर्थिक प्रभाव:** वनों पर निर्भर लोगों की आजीविका समाप्त हो जाती है, जिससे आदिवासी और ग्रामीण समुदायों पर असमान रूप से प्रभाव पड़ता है।

### वनों की कटाई से निपटने की चुनौतियाँ

- **आर्थिक निर्भरता:** कृषि निर्यात और लकड़ी व्यापार उष्णकटिबंधीय देशों की आय के प्रमुख स्रोत हैं।
- **कमजोर शासन:** वन संरक्षण कानूनों का कमजोर प्रवर्तन।
- **जनसंख्या दबाव:** भोजन और भूमि की बढ़ती मांग।
- **स्वास्थ्य संबंध:** वनों की कटाई के मानव मृत्यु पर प्रत्यक्ष प्रभाव को सीमित मान्यता।

### वैश्विक स्तर पर उठाए गए कदम

- **वैश्विक पहलें:**
  - ▲ **UN-REDD कार्यक्रम (2008):** FAO, UNDP और UNEP का संयुक्त प्रयास जो वनों की कटाई और क्षरण से उत्सर्जन को कम करने पर केंद्रित है।
  - ▲ **पेरिस समझौता (2015):** जलवायु परिवर्तन से निपटने में वनों की भूमिका को मान्यता देता है और वनों की कटाई से उत्सर्जन को कम करने की आवश्यकता पर बल देता है।
  - ▲ **ग्लासगो नेताओं की घोषणा (2021):** 2030 तक वनों की हानि को रोकने और पलटने का संकल्प।
  - ▲ **अमेज़न फंड (2008):** अमेज़न क्षेत्र में वनों की कटाई को रोकने, निगरानी करने और उससे लड़ने के लिए परियोजनाओं को वित्तपोषित करता है।

### भारत की पहलें

- ▲ **ग्रीन इंडिया मिशन (GIM):** जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वन आवरण बढ़ाने और वर्तमान वनों की गुणवत्ता सुधारने का लक्ष्य।
- ▲ **प्रतिपूरक वनीकरण निधि अधिनियम (2016):** गैर-वन कार्यों के लिए वन भूमि उपयोग करने वालों से प्रतिपूरक शुल्क लेकर वनीकरण के लिए धन सुनिश्चित करता है।
- ▲ **इको-सेंसिटिव ज़ोन (ESZs):** संरक्षित क्षेत्रों (राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्यों) के चारों ओर ऐसे क्षेत्र जो मानव गतिविधियों के नकारात्मक प्रभाव को कम करते हैं।
- ▲ **संयुक्त वन प्रबंधन (JFM):** राज्य वन विभागों और स्थानीय समुदायों के बीच साझेदारी को बढ़ावा देता है ताकि वन संसाधनों की रक्षा एवं पुनर्जीवन किया जा सके।

### आगे की राह

- **अंतरराष्ट्रीय सहयोग को सुदृढ़ करें:** ग्लोबल साउथ को वनों की कटाई कम करने के लिए वित्तीय और तकनीकी सहायता की आवश्यकता है ताकि विकास प्रभावित न हो।
- **स्वास्थ्य आयाम को शामिल करें:** वनों की कटाई के जलवायु-स्वास्थ्य संबंधों को नीति ढांचे में शामिल किया जाना चाहिए।
- **समुदाय सशक्तिकरण:** संरक्षण निर्णयों में आदिवासी समुदायों को शामिल किया जाना चाहिए।
- **वन निगरानी:** वास्तविक समय में निगरानी के लिए उपग्रह-आधारित तकनीकों का उपयोग करें।
  - ▲ **ग्लोबल फॉरेस्ट वॉच:** उपग्रह तकनीक का उपयोग करने वाली वास्तविक समय की वन निगरानी प्रणाली (वर्ल्ड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट द्वारा समर्थित)।
  - ▲ **भारत में:** फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया (FSI) द्विवार्षिक राज्य वन रिपोर्टों के लिए उपग्रह डेटा का उपयोग करता है।

Source: [IE](#)



## इसरो की तकनीकियाँ निजी फर्मों को हस्तांतरित

### सन्दर्भ

- भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन एवं प्राधिकरण केंद्र (IN-SPACe) ने इसरो द्वारा विकसित पाँच तकनीकों को पाँच भारतीय कंपनियों को हस्तांतरित करने में सहायता की है।



### परिचय

- इन हस्तांतरणों का उद्देश्य व्यावसायीकरण को बढ़ावा देना, आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करना, आयात को कम करना और ऑटोमोटिव, बायोमेडिकल तथा औद्योगिक विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में अंतरिक्ष तकनीकों के व्यापक अनुप्रयोगों को सक्षम बनाना है।

### हस्तांतरित प्रौद्योगिकियाँ

- बायोमेडिकल उपयोग के लिए:** अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र (SAC) द्वारा विकसित निम्न-तापमान सह-ज्वलित सिरेमिक (LTCC) मल्टी-चिप मॉड्यूल, कई अर्धचालक चिप्स को एक एकल, कॉम्पैक्ट मॉड्यूल में एकीकृत करने में सक्षम बनाता है।
  - इसे उच्च-मात्रा उत्पादन की आवश्यकता वाले RT-PCR किट के लिए अधिग्रहित किया गया है।

- सौर पैनल बॉन्डिंग के लिए:** विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र (VSSC) द्वारा विकसित RTV सिलिकॉन सिंगल-पार्ट एडहेसिव (SILCEM R9), एक कमरे के तापमान पर ठीक होने वाला एडहेसिव है।
  - इसे सौर पैनल बॉन्डिंग के लिए अधिग्रहित किया गया है।
- औद्योगिक उपयोग के लिए:** तीन अन्य तकनीकों को औद्योगिक उपयोग के लिए तीन संगठनों को हस्तांतरित किया गया है।

### अंतरिक्ष उद्योग में भारत की हिस्सेदारी

- भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था 8 अरब डॉलर की है, जो वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में 2-3% का योगदान देती है, और 2030 तक इसके 8% और 2047 तक 15% तक बढ़ने की संभावना है।
- 400 से अधिक निजी अंतरिक्ष कंपनियों के साथ, भारत अंतरिक्ष कंपनियों की संख्या के मामले में वैश्विक स्तर पर पाँचवें स्थान पर है।

### अंतरिक्ष उद्योग में निजी खिलाड़ी

- भारत में अंतरिक्ष स्टार्टअप्स की संख्या 2022 में केवल एक से बढ़कर 2024 में लगभग 200 हो जाएगी।
- इन स्टार्टअप्स को प्राप्त कुल फंडिंग 2021 में 67.2 मिलियन डॉलर से बढ़कर 2023 में 124.7 मिलियन डॉलर हो गई।
- स्काईरूट ने उपग्रह प्रक्षेपण में क्रांति लाने की योजना के साथ भारत का प्रथम निजी तौर पर निर्मित रॉकेट, विक्रम-एस, अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया है।

### भारत में अंतरिक्ष उद्योग में निजी क्षेत्र का विनियमन

- राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन एवं प्राधिकरण केंद्र (IN-SPACe):** यह अंतरिक्ष विभाग में एक स्वायत्त और एकल खिड़की नोडल एजेंसी है जो सरकारी और निजी दोनों संस्थाओं की अंतरिक्ष गतिविधियों के संवर्धन, प्रोत्साहन और विनियमन के लिए कार्य करती है।
- न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड (NSIL):** अंतरिक्ष विभाग की वाणिज्यिक शाखा के रूप में कार्य करता है:

- ✧ इसरो द्वारा विकसित अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों का व्यावसायीकरण करता है।
- ✧ अंतरिक्ष परिसंपत्तियों का निर्माण और खरीद करता है।
- ✧ सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों के ग्राहकों को व्यावसायिक शर्तों पर सेवाएँ प्रदान करता है।

### अंतरिक्ष क्षेत्र के निजीकरण का महत्व

- **लागत में कमी:** लाभ की भावना निजी कंपनियों को अंतरिक्ष मिशनों और उपग्रह प्रक्षेपणों में लागत कम करने के लिए प्रेरित करती है।
- **प्रतिस्पर्धा और नवाचार:** निजीकरण प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है, दक्षता बढ़ाता है और नवाचार को बढ़ावा देता है।
- **व्यावसायीकरण:** निजी कंपनियाँ कृषि, आपदा प्रबंधन, शहरी नियोजन, नौवहन और संचार जैसे क्षेत्रों में अंतरिक्ष अनुप्रयोगों को सक्षम बनाती हैं।
- **स्वायत्तता:** निर्णय लेने में अधिक स्वायत्तता निजी कंपनियों को नई परियोजनाओं को अधिक तेज़ी से शुरू करने की अनुमति देती है।
- **रोज़गार और आत्मनिर्भरता:** निजीकरण रोज़गार सृजन करता है, आधुनिक तकनीक अपनाने में सहायक होता है और अंतरिक्ष क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने में सहायता करता है।

### चुनौतियाँ

- **उच्च निवेश लागत:** अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के लिए भारी निवेश की आवश्यकता होती है, जिससे धनी निगमों का एकाधिकार हो सकता है।
- **विशेषज्ञता:** अंतरिक्ष तकनीक के निर्माण और संचालन के लिए विशिष्ट तकनीकी कौशल एवं संसाधनों की आवश्यकता होती है।
- **बौद्धिक संपदा अधिकारों (आईपीआर) की सुरक्षा:** नवाचार और निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए बौद्धिक संपदा अधिकारों की सुरक्षा आवश्यक है।

- **अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा:** भारतीय निजी अंतरिक्ष कंपनियों को वैश्विक स्तर पर स्पेसएक्स और ब्लू ओरिजिन जैसी स्थापित कंपनियों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है।

### सरकार द्वारा उठाए गए कदम

- **अंतरिक्ष क्षेत्र सुधार (2020):** सरकार ने निजी क्षेत्र की भागीदारी की अनुमति दी, IN-SPACe, ISRO और NSIL की भूमिकाओं को परिभाषित किया।
- **स्पेस विज़न 2047:** 2035 तक भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS) और 2040 तक भारतीय चंद्रमा पर लैंडिंग का लक्ष्य।
  - ✧ गगनयान कार्यक्रम अपने अंतिम चरण में प्रवेश कर चुका है, और प्रथम मानव अंतरिक्ष यान अब 2027 की प्रथम तिमाही में निर्धारित है।
  - ✧ भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS) का प्रथम मॉड्यूल 2028 तक।
  - ✧ आगामी पीढ़ी का उपग्रह प्रक्षेपण यान (NGLV) 2032 तक।
  - ✧ चंद्रयान-4 2027 तक, चंद्रमा के नमूने एकत्र करने और वापसी तकनीक का प्रदर्शन करने के लिए।
  - ✧ शुक्र का अध्ययन करने के लिए 2028 तक वीनस ऑर्बिटर मिशन (VOM)।
- **भारतीय अंतरिक्ष नीति, 2023:** अंतरिक्ष गतिविधियों में गैर-सरकारी संस्थाओं (NGE) के लिए समान अवसर सुनिश्चित करती है।
- **वेंचर कैपिटल फंड:** आगामी 5 वर्षों में IN-SPACe के अंतर्गत अंतरिक्ष स्टार्टअप के लिए 1000 करोड़ रुपये का फंड।
- **स्पेसटेक इनोवेशन नेटवर्क (SpIN):** SpIN अंतरिक्ष उद्योग में स्टार्ट-अप्स और लघु एवं मध्यम उद्यमों (SME) के लिए अपनी तरह का एक अद्वितीय सार्वजनिक-निजी सहयोग है।
  - ✧ संशोधित FDI नीति के अंतर्गत, अंतरिक्ष क्षेत्र में 100% FDI की अनुमति है।
  - ✧ उपग्रह-संबंधी गतिविधियों के लिए 74% तक (स्वचालित मार्ग); इसके बाद सरकारी मार्ग।

- ▲ प्रक्षेपण यान और अंतरिक्ष बंदरगाहों के लिए 49% तक (स्वचालित मार्ग); इसके पश्चात सरकारी मार्ग।
- ▲ उपग्रहों और भू-उपयोगकर्ता खंडों के लिए घटकों और उप-प्रणालियों के निर्माण के लिए 100% (स्वचालित मार्ग)।

### आगे की राह

- निजी संस्थाएँ अब रॉकेट और उपग्रहों के अनुसंधान, निर्माण एवं निर्माण के महत्वपूर्ण पहलुओं में सक्रिय रूप से शामिल हैं, जिससे नवाचार के एक जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा मिल रहा है। इससे भारतीय कंपनियों को वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकृत करने की संभावना है।
- इससे, कंपनियाँ देश के अंदर अपनी विनिर्माण सुविधाएँ स्थापित कर सकेंगी, जिससे सरकार की 'मेक इन इंडिया (MII)' और 'आत्मनिर्भर भारत' पहलों को उचित प्रोत्साहन मिलेगा।

Source: TH

## 15वां भारत-जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन

### सन्दर्भ

- प्रधानमंत्री मोदी 15वें भारत-जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए दो दिवसीय यात्रा पर हैं।

### परिचय

- दोनों पक्षों द्वारा रक्षा हार्डवेयर खरीद सहित 2008 के सुरक्षा सहयोग घोषणापत्र को उन्नत करने, लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं के निर्माण हेतु एक "आर्थिक सुरक्षा" पहल शुरू करने और जापान के निवेश लक्ष्यों को लगभग 68 बिलियन डॉलर तक बढ़ाने की संभावना है।
- शिखर सम्मेलन में आर्थिक और निवेश साझेदारी को गहरा करने के साथ-साथ दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को भी बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किए जाने की संभावना है।
- दोनों पक्षों द्वारा एआई एवं सेमीकंडक्टर से जुड़ी एक डिजिटल साझेदारी शुरू करने और सार्वजनिक बुनियादी ढांचे पर ध्यान केंद्रित करने की संभावना है।

- वे हाइड्रोजन और नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं में द्विपक्षीय ऊर्जा साझेदारी को भी बढ़ावा दे सकते हैं।

### भारत-जापान संबंधों पर संक्षिप्त जानकारी

- **संबंधों की स्थापना:** द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात, भारत ने 1952 में जापान के साथ एक अलग शांति संधि पर हस्ताक्षर किए, जिसने औपचारिक राजनयिक संबंधों की शुरुआत को चिह्नित किया।
- **द्विपक्षीय संबंधों में वृद्धि:** भारत-जापान द्विपक्षीय संबंधों को 2000 में वैश्विक साझेदारी, 2006 में रणनीतिक एवं वैश्विक साझेदारी, और 2014 में विशेष रणनीतिक तथा वैश्विक साझेदारी के स्तर तक उन्नत किया गया।
- **रणनीतिक तालमेल:** भारत की एकट ईस्ट नीति और इंडो-पैसिफिक महासागर पहल जापान की मुक्त और मुक्त इंडो-पैसिफिक नीति के साथ घनिष्ठ रूप से संरेखित हैं।
- **वैश्विक पहलों पर सहयोग:** जापान और भारत अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन, आपदा रोधी अवसंरचना गठबंधन, और उद्योग परिवर्तन नेतृत्व समूह जैसी पहलों में सहयोग करते हैं।
  - ▲ दोनों देश जापान-ऑस्ट्रेलिया-भारत-अमेरिका क्वाड और भारत-जापान-ऑस्ट्रेलिया आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल जैसे बहुपक्षीय ढाँचों में एक साथ कार्य करते हैं।
- **रक्षा एवं सुरक्षा:** सुरक्षा सहयोग पर संयुक्त घोषणा (2008), रक्षा सहयोग एवं आदान-प्रदान समझौता जापान (2014), सूचना संरक्षण समझौता (2015), आपूर्ति एवं सेवाओं के पारस्परिक प्रावधान पर समझौता (2020), और यूनिफॉर्म नौसैनिक मस्तूल का सह-विकास (2024)।
- **अभ्यास:** मालाबार (अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के साथ), मिलान (बहुपक्षीय नौसैनिक), जिमेक्स (द्विपक्षीय समुद्री), धर्म गार्जियन (सेना), और टटरक्षक सहयोग नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं।
  - ▲ 2024-25 में भारत और जापान के सेना प्रमुखों ने भाग लिया, जिससे अंतर-संचालन क्षमता मजबूत हुई।

- **द्विपक्षीय व्यापार:** 2023-24 में द्विपक्षीय व्यापार 22.8 बिलियन डॉलर तक पहुँच गया।
- जापान से आयात निर्यात से अधिक बना हुआ है। भारत के मुख्य निर्यात रसायन, वाहन, एल्युमीनियम और समुद्री खाद्य हैं; आयात में मशीनरी, इस्पात, तांबा एवं रिएक्टर शामिल हैं।
- **निवेश:** जापान भारत का पाँचवाँ सबसे बड़ा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) स्रोत है, जिसका 2024 तक कुल निवेश 43.2 बिलियन डॉलर है।
  - ▲ जापान ने भारत को लगातार सबसे आशाजनक दीर्घकालिक निवेश गंतव्य माना है।
- **अंतरिक्ष सहयोग:** इसरो और जाक्सा एक्स-रे खगोल विज्ञान, उपग्रह नेविगेशन, चंद्र अन्वेषण एवं एशिया प्रशांत क्षेत्रीय अंतरिक्ष एजेंसी फोरम (APRSAF) में सहयोग करते हैं।
  - ▲ 2016 में, उन्होंने शांतिपूर्ण अंतरिक्ष अन्वेषण और उपयोग के लिए एक सहयोग ज्ञापन (MoC) पर हस्ताक्षर किए।
- **उभरते हुए प्रमुख क्षेत्र:** डिजिटल सहयोग (सेमीकंडक्टर, स्टार्टअप), स्वच्छ ऊर्जा, आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन, औद्योगिक प्रतिस्पर्धात्मकता और कौशल विकास।
- **विकास और अवसंरचना सहयोग:** जापान 1958 से भारत का सबसे बड़ा ओडीए दाता रहा है, जो महत्वपूर्ण अवसंरचना और मानव विकास परियोजनाओं का समर्थन करता है।
  - ▲ 2023-24 में ओडीए संवितरण लगभग 580 बिलियन जापानी येन (4.5 बिलियन डॉलर) रहा।
  - ▲ मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल परियोजना, उन्नत प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और कौशल विकास का प्रतीक है।
- **पर्यटन:** 2023-24 को पर्यटन आदान-प्रदान वर्ष के रूप में मनाया गया, जिसका विषय था “हिमालय को माउंट फूजी से जोड़ना”।
- **प्रवासी:** जापान में लगभग 54,000 भारतीय रहते हैं, जिनमें मुख्यतः आईटी पेशेवर और इंजीनियर हैं।

## चुनौतियाँ

- **व्यापार असंतुलन:** एक महत्वपूर्ण व्यापार असंतुलन है, क्योंकि जापान भारत को जितना निर्यात करता है, उससे कहीं अधिक भारत जापान को निर्यात करता है, जिससे बेहतर पारस्परिक व्यापार की आवश्यकता उत्पन्न होती है।
- **भू-राजनीतिक तनाव:** क्षेत्रीय सुरक्षा मुद्दे, जैसे कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन का प्रभाव, भारत-जापान संबंधों के लिए चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं, जिनके लिए सावधानीपूर्वक कूटनीतिक संतुलन की आवश्यकता होती है।
- **सांस्कृतिक और भाषाई बाधाएँ:** सुदृढ़ संबंधों के बावजूद, भाषा, संस्कृति और व्यावसायिक प्रथाओं में अंतर गहन एकीकरण के लिए चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं।
- **सीमित जन-से-जन आदान-प्रदान:** जन-से-जन संपर्क का पैमाना अभी भी सीमित है, जिससे गहरी आपसी समझ प्रभावित होती है।
- **बुनियादी ढाँचे की बाधाएँ:** सुधारों के बावजूद, भारत के कुछ क्षेत्रों में अभी भी बड़े पैमाने पर जापानी निवेश को प्रभावी ढंग से समर्थन देने के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचे का अभाव है।
- **विभिन्न आर्थिक प्राथमिकताएँ:** भारत का तीव्र आर्थिक विकास पर ध्यान कभी-कभी जापान के सतत विकास और प्रौद्योगिकी पर जोर से विपरीत हो सकता है।

## आगे की राह

- **व्यापार और निवेश बढ़ाएँ:** जापान को भारतीय निर्यात बढ़ाकर और भारत के विनिर्माण एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में जापानी निवेश को प्रोत्साहित करके व्यापार असंतुलन को कम करने पर ध्यान केंद्रित करें।
- **लोगों के बीच संपर्क बढ़ाएँ:** आपसी समझ को बेहतर करने के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान, पर्यटन और शैक्षिक सहयोग बढ़ाएँ।

- **प्रौद्योगिकी और नवाचार साझेदारी:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, नवीकरणीय ऊर्जा और अंतरिक्ष अन्वेषण में सहयोग के लिए जापान की प्रौद्योगिकी विशेषज्ञता एवं भारत के बढ़ते डिजिटल क्षेत्र का लाभ उठाएँ।
- **पर्यावरणीय चिंताओं का समाधान:** दोनों देशों के हरित ऊर्जा लक्ष्यों का समर्थन करने के लिए पर्यावरणीय स्थिरता, जलवायु परिवर्तन और आपदा प्रतिरोधक क्षमता पर सहयोग बढ़ाएँ।

Source: IE

## ‘विदेशियों को भी अनुच्छेद 21 के अंतर्गत स्वतंत्रता का अधिकार है’: उच्च न्यायालय

### समाचार में

- पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय ने जालसाजी और अवैध प्रवास के आरोप में एक बांग्लादेशी महिला को जमानत दे दी और कहा कि अनुच्छेद 21 के अंतर्गत व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार विदेशियों पर भी लागू होता है।

### हालिया फैसले के बारे में

- पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय ने इस बात पर बल दिया कि विदेशियों को भी व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार है, और जमानत देने की क्षमता के बिना लंबे समय तक हिरासत में रखने से “अपरिवर्तनीय अन्याय” होगा।
- अनुच्छेद 21 में ‘व्यक्ति’ शब्द इतना व्यापक है कि इसमें न केवल नागरिक, बल्कि विदेशी भी सम्मिलित हैं।
- राज्य का दायित्व है कि वह ऐसे विदेशियों की स्वतंत्रता की रक्षा करे और यह सुनिश्चित करे कि कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अलावा उनकी स्वतंत्रता से वंचित न किया जाए।
- इसने यह भी स्वीकार किया कि बिना दस्तावेज वाले प्रवासियों के लिए जमानत जमा करना कठिन है और कहा कि जमानत की शर्तें इतनी कठोर नहीं हो सकतीं कि वे प्रभावी रूप से स्वतंत्रता से वंचित कर दें।

## भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21

- भारत के संविधान का अनुच्छेद 21, कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अतिरिक्त, जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सुरक्षा के मौलिक अधिकार की गारंटी देता है।
- यह जीवन और स्वतंत्रता से मनमाने ढंग से वंचित किए जाने के विरुद्ध कुछ सुरक्षा उपाय सुनिश्चित करता है।
  - ▲ यह जीवन के अधिकार की रक्षा करता है, जिसमें सम्मान के साथ जीवन जीना, आजीविका का अधिकार और स्वस्थ वातावरण का अधिकार, साथ ही व्यक्तिगत स्वतंत्रता, जैसे कि कानूनी रूप से घूमने, रहने एवं कार्य करने की स्वतंत्रता शामिल है।
  - ▲ सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों द्वारा अनुच्छेद 21 की व्याख्या।
- **प्रारंभिक व्याख्या:** ए.के. गोपालन बनाम मद्रास राज्य मामले में, सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अर्थ ‘शारीरिक स्वतंत्रता’ है, जो गिरफ्तारी और नजरबंदी से, झूठे नजरबंदी से स्वतंत्रता है।
- **क्षेत्र का विस्तार:** आर.सी. कूपर बनाम भारत संघ (1970) के मामले में, न्यायालय ने माना कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता शब्द में न केवल अनुच्छेद 21 शामिल होगा, बल्कि अनुच्छेद 19 (1) के अंतर्गत प्रदत्त 6 मौलिक स्वतंत्रताएँ भी शामिल होंगी।
  - ▲ मेनका गांधी बनाम भारत संघ (1978) में, सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि अनुच्छेद 21 के अंतर्गत जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार केवल पशु अस्तित्व तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सम्मान के साथ जीने का अधिकार भी शामिल है।
- **आजीविका और आश्रय का अधिकार:** ओल्गा टेलिस बनाम बॉम्बे नगर निगम (1985) में, न्यायालय ने आजीविका के अधिकार को अनुच्छेद 21 के अंतर्गत जीवन के अधिकार का एक अभिन्न अंग माना।
  - ▲ इसने माना कि वैकल्पिक व्यवस्था प्रदान किए बिना फुटपाथ निवासियों को बेदखल करना उनके जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन होगा।



- **गरिमा और सुरक्षित वातावरण का अधिकार:** विशाखा बनाम राजस्थान राज्य (1997) में, न्यायालय ने माना कि सुरक्षित और संरक्षित कार्य वातावरण का अधिकार अनुच्छेद 21 से प्राप्त एक मौलिक अधिकार है।
- **निजता का अधिकार:** के.एस. पुट्टस्वामी बनाम भारत संघ (2017) के निर्णय में, सर्वोच्च न्यायालय ने निजता के अधिकार को अनुच्छेद 21 के अंतर्गत संरक्षित मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी।
- **सम्मान के साथ मृत्यु का अधिकार:** कॉमन कॉज बनाम भारत संघ (2018) में, न्यायालय ने निष्क्रिय इच्छामृत्यु को वैध ठहराया और सम्मान के साथ मृत्यु के अधिकार को अनुच्छेद 21 के अंतर्गत मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी।

Source: IE

## समुद्रयान परियोजना के अंतर्गत गहरे समुद्र में अन्वेषण

### सन्दर्भ

- हाल ही में, दो भारतीय 'जलयानियों' ने आगामी समुद्रयान परियोजना की तैयारियों के अंतर्गत अटलांटिक महासागर की गहराई में यात्रा की। इस परियोजना के अंतर्गत भारत का लक्ष्य 2027 तक तीन मानवों को 6,000 मीटर की गहराई तक भेजना है।

### समुद्रयान परियोजना के बारे में

- यह भारत के डीप ओशन मिशन के अंतर्गत एक प्रमुख पहल है, जिसे 2021 में कैबिनेट द्वारा पाँच वर्षों में ₹4,077 करोड़ के बजट के साथ अनुमोदित किया गया था। इसके प्रमुख उद्देश्यों में शामिल हैं:
  - ▲ ब्लू इकॉनमी रणनीति के माध्यम से भारत के 11,098 किलोमीटर लंबे समुद्र तट का दोहन।
  - ▲ अप्रयुक्त गहरे समुद्र के खनिजों, ईंधनों और जैव विविधता संसाधनों का अन्वेषण।
  - ▲ समुद्र के नीचे दूरसंचार केबलों की सुरक्षा और सुरक्षा, जो वैश्विक संपर्क के लिए महत्वपूर्ण हैं।

- ▲ भारत को गहरे समुद्र में मानव अन्वेषण क्षमता वाले देशों - अमेरिका, रूस, चीन, जापान और फ्रांस सहित - के एक विशिष्ट समूह में शामिल करना।
- ▲ यह राष्ट्रीय महासागर प्रौद्योगिकी संस्थान (NIOT) के अंतर्गत डीप ओशन मिशन के एक भाग के रूप में कार्य करता है।
- समुद्रयान परियोजना के शुभारंभ के साथ, भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, चीन, जापान और फ्रांस के साथ, मानवयुक्त गहरे समुद्र में अन्वेषण करने में सक्षम देशों के एक विशिष्ट समूह में शामिल होने के लिए तैयार है।

### मत्स्य-6000: भारत का गहरे समुद्र में पनडुब्बी

- भारत के जलयान मत्स्य-6000 में यात्रा करने का लक्ष्य रखते हैं, जो भारत में निर्मित टाइटेनियम पनडुब्बी है और जिसे राष्ट्रीय महासागर प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा विकसित एक बड़ी मछली की तरह डिज़ाइन किया गया है।
- **क्षमता:** 12 घंटे के लिए 3 मानव, 96 घंटे तक आपातकालीन सहनशक्ति।
- **प्रारंभिक परीक्षण:** स्टील का गोला 500 मीटर तक गोता लगा सकता है (चेन्नई के तट पर गीला परीक्षण, फरवरी)।

### प्रमुख चुनौतियाँ

- **पोत विकास:** टाइटेनियम मिश्र धातु के गोले की सटीक मोटाई आवश्यक है, और मोटाई में 0.2 मिमी का भी विचलन ढहने का जोखिम उत्पन्न करता है।
  - ▲ निर्माण में इलेक्ट्रॉन बीम वेल्डिंग शामिल है, जिसमें इसरो इस प्रक्रिया में सहायता कर रहा है।
- **जीवन रक्षक प्रणालियाँ:** ऑक्सीजन विनियमन और कार्बन डाइऑक्साइड स्क्रबिंग महत्वपूर्ण हैं।
  - ▲ आपात स्थिति के लिए री-ब्रीदिंग ऑक्सीजन सिस्टम से लैस, साँस छोड़ते हुए वायु का पुनर्चक्रण।
- **एक्वानॉट स्वास्थ्य:** उच्च शारीरिक फिटनेस आवश्यक है, और भोजन और जल का सेवन सीमित है।
- **संचार:** रेडियो तरंगें पानी के अंदर विफल हो जाती हैं, जिसके लिए ध्वनिक टेलीफोन की आवश्यकता होती है।

- भारत ने अपनी स्वयं की प्रणाली विकसित की, हालाँकि प्रारंभिक परीक्षणों में तापमान और लवणता के प्रभावों से जूझना पड़ा। बाद में खुले समुद्र में किए गए परीक्षणों ने इसकी कार्यक्षमता की पुष्टि की।

### भविष्य की ओर देखते हुए

- समुद्रयान परियोजना भारत की ब्लू इकॉनमी की महत्वाकांक्षाओं और वैज्ञानिक नवाचार के लिए एक बड़ा प्रोत्साहन है।
- भारत जल्द ही गहरे समुद्र में मानव अन्वेषण में वैश्विक नेताओं के साथ खड़ा हो सकता है, मत्स्य-6000 की सफल तैनाती के साथ रणनीतिक और तकनीकी आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करते हुए विशाल संसाधनों का दोहन कर सकता है।

Source: IE

## संक्षिप्त में समाचार

### बर्मी अजगर

#### समाचार में

- फ्लोरिडा के अधिकारी आक्रामक बर्मीज़ अजगरों को पकड़ने के लिए एक नए उपकरण के रूप में रोबोटिक खरगोशों का उपयोग कर रहे हैं।

#### बर्मीज़ अजगर (पायथन बिबिटेटस)

- बर्मीज़ अजगर विश्व के सबसे लंबे साँपों में से एक हैं।
- यह मुख्य रूप से मैंग्रोव और वर्षावनों जैसे वन क्षेत्रों में पाया जाता है, लेकिन घास के मैदानों, दलदली भूमि, आर्द्रभूमि एवं नदियों व नालों के पास भी पाया जाता है।
- वितरण:** यह दक्षिण-पूर्व एशिया में पाई जाने वाली एक व्यापक रूप से वितरित प्रजाति है, जिसकी जनसंख्या में व्यापक और व्यापक गिरावट के प्रमाण मिले हैं।
  - यह पूर्वोत्तर भारत, नेपाल, इंडोनेशिया और चीन के अलग-थलग क्षेत्रों में पाया जाता है।
  - यह अमेरिका के दक्षिणी फ्लोरिडा में भी एक आक्रामक, स्थापित जनसंख्या है, जहाँ इसने स्थानीय वन्यजीवों को गंभीर रूप से प्रभावित किया है।

- संरक्षण स्थिति:** संकटग्रस्त प्रजातियों की IUCN लाल सूची इसे संवेदनशील के रूप में वर्गीकृत करती है।

Source : IE

### खेन राजवंश के पृथु राय

#### सन्दर्भ

- असम मंत्रिमंडल ने निर्णय लिया कि गुवाहाटी के मध्य में बन रहे एक नए फ्लाईओवर का नाम 13वीं शताब्दी के कामरूप शासक पृथु के नाम पर रखा जाएगा।

#### परिचय

- बख्तियार खिलजी/खलजी (लगभग 1200 ई.) मुहम्मद गौर के अधीन एक तुर्क-अफ़ग़ान सेनापति थे।
- 1206 ई. में, उन्होंने कामरूप (वर्तमान असम) पर एक अभियान चलाया, लेकिन उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा।
- कथित तौर पर उनकी सेनाएँ नष्ट कर दी गईं, लेकिन स्थानीय शासक की पहचान अभी भी विवादित है।
- बाद के इतिहासकारों (विशेषकर कनक लाल बरूआ, 1933) ने इस विजय का संबंध कामरूप के पृथु नामक शासक से जोड़ा।

#### राजा पृथु और कामरूप साम्राज्य के बारे में

- 13वीं शताब्दी के आरंभ में, कामरूप पर खेन वंश के राजा पृथु राय का शासन था, जिनके बारे में माना जाता है कि वे साधारण मूल के थे और नरकासुर के वंशज थे।
- कामरूप असम का प्रथम ऐतिहासिक साम्राज्य था, जो लगभग चौथी शताब्दी ईस्वी से तेरहवीं शताब्दी ईस्वी तक अस्तित्व में रहा।
- यह ब्रह्मपुत्र घाटी में स्थित था, जिसकी राजधानी प्रागज्योतिषपुर (आधुनिक गुवाहाटी) थी।
- तेरहवीं शताब्दी के बाद राजनीतिक परिवर्तन।
- पाल वंश के पतन और पृथु के पतन के पश्चात, कामरूप छोटे-छोटे राज्यों में विखंडित हो गया।
- पश्चिमी भाग कामाता साम्राज्य (तेरहवीं-सोलहवीं शताब्दी) के रूप में विकसित हुआ।

- पूर्वी असम में अहोमों का उदय हुआ (1228 ईस्वी से), जो बाद में प्रभावशाली हो गए।

Source: [IE](#)

## नुआखाई त्योहार

### सन्दर्भ

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नुआखाई के अवसर पर देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ दीं।

### त्योहार के बारे में

- नुआखाई ओडिशा के पश्चिमी जिलों में मनाया जाता है। “नुआखाई” शब्द दो ओड़िया शब्दों से मिलकर बना है: “नुआ”, जिसका अर्थ है “नया”, और “खाई”, जिसका अर्थ है “भोजन” या “खाना”।
- इस दिन, किसान अच्छी फसल के लिए आभार व्यक्त करते हुए, मौसम का प्रथम अनाज भगवान को अर्पित करते हैं और बड़ों से आशीर्वाद लेते हैं।
- यह त्योहार पारंपरिक नृत्य, संगीत, खेलों और दावतों के साथ सामुदायिक समारोहों में शामिल होता है और गणेश चतुर्थी के एक दिन बाद मनाया जाता है।

Source: [PIB](#)

## फूजी पर्वत

### सन्दर्भ

- जापान ने हाल ही में माउंट फूजी के फटने का एक कृत्रिम बुद्धि (AI) द्वारा निर्मित वीडियो जारी किया है, ताकि लोगों को यह अनुमान हो सके कि अगर कोई आपदा आती है तो क्या संभावना करनी चाहिए और स्वयं को कैसे तैयार रखना चाहिए।

### माउंट फूजी के बारे में

- यह जापानी द्वीप होंशू पर स्थित एक सक्रिय स्ट्रेटोज्वालामुखी है, जिसकी चोटी की ऊँचाई 3,776.24 मीटर है।
- भौगोलिक महत्व:** यह जापान का सबसे ऊँचा पर्वत, किसी भी एशियाई द्वीप पर दूसरा सबसे ऊँचा ज्वालामुखी और पृथ्वी पर किसी भी द्वीप की सातवीं सबसे ऊँची चोटी है।

- सांस्कृतिक महत्व:** यह माउंट टेट और माउंट हाकू के साथ जापान के “तीन पवित्र पर्वतों” में से एक माना जाता है।

- माउंट फूजी को 2013 में यूनेस्को विश्व सांस्कृतिक विरासत स्थल के रूप में फुजीसान के रूप में अंकित किया गया था, जो एक पवित्र स्थान और कलात्मक प्रेरणा का स्रोत है।

- यह ज्वालामुखी 1707 के बाद से नहीं फटा है।

### स्ट्रेटोज्वालामुखी

- एक स्ट्रेटोज्वालामुखी, जिसे मिश्रित ज्वालामुखी भी कहा जाता है, एक ऊँचा, ढलानदार, शंकवाकार ज्वालामुखी होता है जो मोटे, चिपचिपे लावा, राख और अन्य ज्वालामुखीय मलबे की परतों से बना होता है।
- इसका विशिष्ट आकार और विस्फोटक विस्फोट इसके मैग्मा की उच्च श्यानता के कारण होते हैं, जो गैसों को आसानी से बाहर निकलने से रोकता है।

Source: [IE](#)

## विस्तारित दूरी की आक्रमणकारी गोला-बारूद (ERAM) मिसाइलें

### सन्दर्भ

- संयुक्त राज्य अमेरिका ने यूक्रेन को 3,350 विस्तारित दूरी की आक्रमणकारी गोला-बारूद (ERAM) मिसाइलों की बिक्री को मंजूरी दे दी है।

### ERAMs

- प्रकार:** आगामी पीढ़ी की, वायु से प्रक्षेपित, सटीक-निर्देशित मिसाइल।
- सीमा और वारहेड:** 240 से 450 किलोमीटर की मारक क्षमता और 500 पाउंड के वारहेड के साथ, ये मिसाइलें क्रीमिया सहित नियंत्रण वाले क्षेत्रों में गहरे अंदर तक आपूर्ति डिपो, कमांड सेंटर और महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे को निशाना बना सकती हैं।
- मार्गदर्शन:** GPS, जड़त्वीय नेविगेशन और टर्मिनल सीकर, इलेक्ट्रॉनिक जैमिंग के अंतर्गत भी 10 मीटर के अंदर सटीकता के साथ।

- **लॉन्च प्लेटफॉर्म:** मॉड्यूलर डिज़ाइन F-16 जैसे पश्चिमी लड़ाकू विमानों पर तैनाती या सोवियत युग के विमानों पर रेट्रोफिटिंग की अनुमति देता है।

Source: [AIR](#)

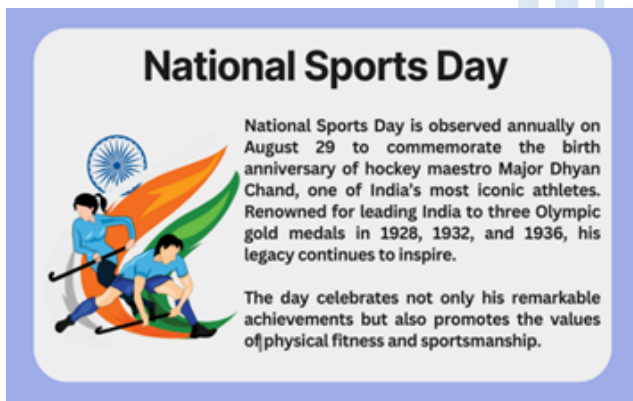
## राष्ट्रीय खेल दिवस

### सन्दर्भ

- राष्ट्रीय खेल दिवस पर, भारत मेजर ध्यानचंद को सम्मानित करता है, जिन्हें इतिहास के महानतम हॉकी खिलाड़ियों में से एक माना जाता है।

### राष्ट्रीय खेल दिवस

- भारत सरकार ने 2012 में 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस घोषित किया।
- यह दिवस खेलों और शारीरिक गतिविधियों के महत्व पर बल देने के लिए प्रतिवर्ष मनाया जाता है तथा भारतीय हॉकी में मेजर ध्यानचंद की विरासत का सम्मान करता है।



- इस वर्ष के समारोह में “एक घंटा, खेल के मैदान में” थीम के अंतर्गत तीन दिवसीय खेल आंदोलन शामिल है।
- भारत में स्वास्थ्य, खेल और फिटनेस को बढ़ावा देने के लिए कई अभियान चलाए जा रहे हैं, जिनमें ‘खेलो इंडिया’ और ‘फिट इंडिया मूवमेंट’ शामिल हैं।
- दूसरी ओर, अंतर्राष्ट्रीय खेल दिवस 6 अप्रैल को एथेंस में आयोजित पहले ओलंपिक खेलों के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

### मेजर ध्यानचंद के बारे में

- उन्हें उनके अनुकरणीय खेल कौशल के लिए “हॉकी के जादूगर” के रूप में जाना जाता है।
- **उपलब्धियाँ:** 1928 (एम्स्टर्डम), 1932 (लॉस एंजिल्स) और 1936 (बर्लिन) में ओलंपिक स्वर्ण पदक जीते।
- उन्हें 1956 में देश के प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान, पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

Source: [AIR](#)

## महिला सुरक्षा पर राष्ट्रीय वार्षिक रिपोर्ट और सूचकांक (NARI) 2025

### सन्दर्भ

- राष्ट्रीय महिला आयोग (NCW) द्वारा हाल ही में महिला सुरक्षा पर राष्ट्रीय वार्षिक रिपोर्ट और सूचकांक (NARI) 2025 जारी किया गया।

### परिचय

- यह सर्वेक्षण 31 शहरों में 12,770 महिलाओं की भागीदारी के साथ आयोजित किया गया था।
- **विकास:** पीवैल्यू एनालिटिक्स, द नॉर्थकैप यूनिवर्सिटी, जिंदल ग्लोबल लॉ स्कूल, और ग्रुप ऑफ इंटेलेक्चुअल्स एंड एकेडमिशियंस (जीआईए) द्वारा प्रकाशित किया गया है।
- **उद्देश्य:** अपराध संबंधी आंकड़ों और महिलाओं की सुरक्षा संबंधी धारणाओं, दोनों को एकत्रित करना।

### मुख्य निष्कर्ष

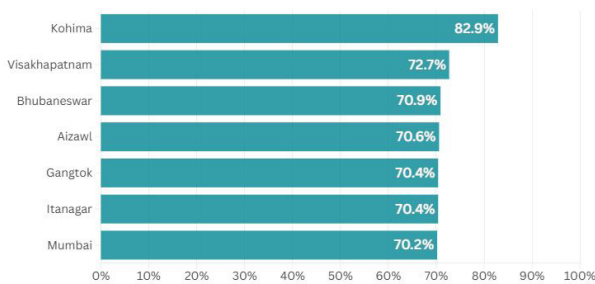
- **राष्ट्रीय सुरक्षा स्कोर:** इसने राष्ट्रीय सुरक्षा स्कोर 65% रखा, और शहरों को इस मानक से “काफी ऊपर”, “ऊपर”, “नीचे” या “काफी नीचे” श्रेणियों में वर्गीकृत किया।
- **सबसे सुरक्षित शहर:** कोहिमा, विशाखापत्तनम, भुवनेश्वर, आइजोल, गंगटोक, ईटानगर, मुंबई।
- **सबसे कम सुरक्षित शहर:** पटना, जयपुर, फरीदाबाद, दिल्ली, कोलकाता, श्रीनगर, रांची।



- **सुरक्षा कारक:** सुदृढ़ लैंगिक समानता, नागरिक भागीदारी, महिला-अनुकूल बुनियादी ढाँचा, बेहतर पुलिस व्यवस्था।
- **कम सुरक्षा कारक:** पितृसत्तात्मक मानदंड, कमजोर संस्थागत जवाबदेही और शहरी बुनियादी ढाँचे में कमियाँ।

National Annual Report and Index on Women's Safety (NARI) 2025  
All India Average: 64.6

Select: Much higher than country avg



Source: TH

## भारतीय नौसेना में सम्मिलित, INS उदयगिरि और INS हिमगिरि की विशेषताएं और विरासत

### समाचार में

- भारतीय नौसेना ने विशाखापत्तनम में एक साथ दो नीलगिरि श्रेणी के स्टील्थ गाइडेड मिसाइल फ्रिगेट, INS उदयगिरि और INS हिमगिरि को नौसेना में शामिल किया।

### उदयगिरि

- INS उदयगिरि प्रोजेक्ट 17ए स्टील्थ फ्रिगेट्स की दूसरी जहाज है, जिसे मुंबई स्थित मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (MDL) द्वारा निर्मित किया गया है।
- यह नौसेना के इन-हाउस वारशिप डिजाइन ब्यूरो द्वारा डिजाइन की गई 100वीं जहाज है।
- यह अपने पूर्ववर्ती, भूतपूर्व INS उदयगिरि का आधुनिक स्वरूप है, जो एक स्टीम शिप थी और अगस्त 2007 में 31 वर्षों की गौरवशाली सेवा के बाद सेवामुक्त हुई थी।
- यह अपने वर्ग की सबसे तीव्रता से डिलीवर की गई जहाज होने का गौरव भी रखती है।

### हिमगिरि

- INS हिमगिरि प्रोजेक्ट 17ए के जहाजों में से प्रथम है, जिसे कोलकाता स्थित गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (GRSE) द्वारा निर्मित किया गया है।
- यह भूतपूर्व INS हिमगिरि का पुनर्जन्म है, जो एक लीनडर-क्लास फ्रिगेट थी और मई 2005 में 30 वर्षों की गौरवशाली सेवा के बाद सेवामुक्त हुई थी।

### डिजाइन और क्षमताएँ

- प्रत्येक जहाज की लंबाई 149 मीटर है, वजन 6,670 टन है, गति 28 नॉट्स तक पहुँचती है, और रेंज 5,500 नॉटिकल मील है।
- **क्रू आकार:** 225 कर्मी।
- उन्नत हथियारों से सुसज्जित जैसे ब्रह्मोस मिसाइलें, बराक-8, टॉरपीडो, रॉकेट लॉन्चर, रडार, इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर सिस्टम और सोनार।
- स्टील्थ के लिए कम रडार क्रॉस-सेक्शन और संयुक्त डीजल या गैस (CODOG) प्रणोदन प्रणाली की विशेषता।

### महत्त्व

- उदयगिरि और हिमगिरि का नौसेना में समावेश युद्ध क्षमताओं को बढ़ाएगा और युद्धपोत डिजाइन व निर्माण में भारत की आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करेगा।
- एक बार कमीशन होने के पश्चात, दोनों फ्रिगेट्स पूर्वी बेड़े का हिस्सा बन जाएँगी, जिससे हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की समुद्री हितों की रक्षा की क्षमता को बल मिलेगा।

Source :IE

## महात्मा अय्यंकाल

### सन्दर्भ

- भारत के प्रधानमंत्री ने महात्मा अय्यंकाली को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की और सामाजिक न्याय व सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनके स्थायी योगदान को सम्मानित किया।

**महात्मा अय्यंकाली के बारे में (1863–1941)**

- **जन्म:** 28 अगस्त 1863, त्रावणकोर की रियासत (वर्तमान में तिरुवनंतपुरम, केरल)।
- वे पुलायर समुदाय से थे, जो ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रहा और जिन्हें मूलभूत अधिकारों से वंचित किया गया।

**प्रमुख आंदोलन और संघर्ष**

- **विल्लुवंडी (बैलगाड़ी) आंदोलन (1893):** उन्होंने जातिगत प्रतिबंधों को चुनौती देते हुए सार्वजनिक सड़कों पर बैलगाड़ी चलाई, जिससे दलितों के आवागमन के अधिकार को स्थापित किया।
- **कुडिप्पल्लीकूडम हड़ताल (1907):** उन्होंने दलित बच्चों के लिए स्कूल में प्रवेश की माँग को लेकर ऐतिहासिक आंदोलन का नेतृत्व किया, जिससे त्रावणकोर सरकार को सभी जातियों के लिए सार्वजनिक स्कूल खोलने पर मजबूर होना पड़ा।
- **कृषि श्रमिक सुधार:** उन्होंने श्रमिकों को संगठित कर उचित वेतन और बेहतर कार्य परिस्थितियों की माँग की, जिससे केरल में श्रमिक अधिकारों की नींव पड़ी।

- **साधु जन परिपालना संघम (SJPS), 1907:** यह एक अग्रणी संगठन था जो दलित शिक्षा और सामाजिक उत्थान के लिए कार्यरत था, जिसकी स्थापना उन्होंने की थी।

**शिक्षा और समानता में विरासत**

- एक दलित बालिका पंचमी का पहला स्कूल प्रवेश, जिसने व्यापक विरोध को जन्म दिया लेकिन अंततः सुधार की दिशा में प्रेरणा बनी।
  - ▲ **अय्यंकाली पंचमी मेमोरियल स्कूल** की स्थापना, जो समावेशी शिक्षा के लिए उनके संघर्ष को स्मरण करता है।
- **अय्यंकाली के योगदान को निम्न रूपों में सम्मानित किया गया है:**
  - ▲ एक स्मारक डाक टिकट (2002);
  - ▲ केरल भर में मूर्तियाँ और स्मारक;
  - ▲ विद्यालयी पाठ्यक्रम और सार्वजनिक विमर्श में समावेश।

[Source: PIB](#)

